तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 28 • अंक 110 • अक्टूबर-दिसम्बर, 2000

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

(मान्य विश्वविद्यालय)

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-110 *October to December, 2000*

Patron
Prof. B.C. Lodha
Vice-Chancellor

Executive-Editor & Editor in Hindi Section
Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial-Board
Dr Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr R.P. Poddar, Pune
Dr Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr J.P.N. Mishra Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-110 OCTOBER-DECEMBER, 2000

Editor in Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun-341 306, Rajasthan

Prinated at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Subscription (Individuals) Annual Rs. 100, Three Year 250, Life Membership Rs. 1500/-
Subscription/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors-may not agree with them.

अनुक्रमणिका / *Contents*

विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1. सम्पादकीय	डॉ. शान्ता जैन	1
2. जरूरी है दर्शन की सीमा का विस्तार	आचार्य महाप्रज्ञ	9
3. हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अपभ्रंश उदाहरण-पद्यों के भाषान्तर का पुनरीक्षण	रामप्रकाश पोद्दार	14
4. अनेकान्त का आध्यात्मिक पक्ष स्याद्वादमंजरी के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. संगीता मेहता	23
5. ऋषभायण में राज्य-व्यवस्था	समणी मंगलप्रज्ञा	29
6. जैन दर्शन में चेतना के विकास की अवधारणा	मुनि मदन कुमार	40
7. श्रावकाचार की सामाजिक उपयोगिता	डॉ. अशोक कुमार जैन	45
8. सर्वसार उपनिषद्... पद्यानुवाद	गोपाल भारद्वाज	52
9. जैन ग्रन्थों में वर्णित भगवान पार्श्व के कतिपय विचारणीय प्रसंग	डॉ. जिनेन्द्र जैन	57
10. भारतीय न्यायशास्त्र में अवयव-विमर्श	डॉ. प्रद्युम्नशाह	62
11. पाण्डुलिपि विवेकमञ्जरी प्रकरण एक अध्ययन	प्रमोद कुमार लाटा	69
12. पंचाणुव्रतों में शिक्षा मूल्य और सामयिक सन्दर्भ	प्राचार्य निहालचन्द जैन	79
13. Protection of the Environment : A Jain Perspective	Prof. B.C. Lodha	84
14. Higher Education as a Means of Social Change & Development of Scientific Temper	Prof. Musafir Singh	91
15. Human slow-wave sleep and the cerebral cortex of the brain	Dr. J.P.N. Mishra	101
16. Concept of Soul in Jainism	Sadhvi Vishrut Vibha	108
17. The Problem of Crime and Punishment : A Humanistic Approach	Dr. Anil Dhar	114

निष्फल है

ज्ञान बिना क्रिया।

क्रिया बिना ज्ञान।

दान बिना धन।

क्षमा बिना तप।

विनय बिना विद्या।

With Best Compliments From :

Shri Balchandji Bhansali

C/o Bhansali Jewellers
86, Canning Street
CALCUTTA-700 001

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

नवीनता की सार्थकता

नई सदी का प्रवेश नए संकल्पों के साथ हो,
तभी इस 'नया' शब्द की सार्थकता हो सकती है।

1. मैं संयमप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।

2. मैं समताप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।

3. मैं सदाचारप्रधान जीवनशैली का विकास करूँगा।

ये तीन संकल्प नई शताब्दी अथवा नई सहस्राब्दी में विद्यमान इस 'नया' शब्द को सार्थकता दे सकते हैं।

- अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ

With Best Compliments From :

PRAKASH BAID

BAID (INDIA) PRIVATE LIMITED
CARNATION FINANCIAL SERVICES LIMITED

(Member National Stock Exchange of India Limited)

9, India Exchange Place, 5th Floor, Calcutta-700 001
Phone : (O) 2214144 (Dir.), 220-5337/3678; (R) 479-2764
Fax : 91-33-221-4144

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित